ISSN 2581-9917

विषाद सौन्दर्य में लिपटा लद्दाख

डॉ. सीमा सिंह*

"तथ्यों और सन्दर्भों से अटे
एक गुम्फित परिदृश्य से बाहर निकलने की कोशिश है यात्रा..."

कवयित्री स्मिता सिन्हा की यह पंक्तियाँ विश्लेषित करती हैं कि यात्रा व्यक्ति को स्वयं से जोड़ने की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है। इसी कड़ी में इस बार हमारी यात्रा दिल्ली से लद्दाख की रही। सात वर्षीय कबीर के साथ वर्ष में सात या आठ यात्राएं हो ही जाती हैं।

देश और विदेश की यह सभी यात्राएं आज तक मैंने और कबीर ने अकेले ही पूर्ण की थी। इस बार भी कहीं बाहर निकलने का निर्णय हम लेने ही वाले थे की अचानक फेसबुक पर प्रोफेसर दीप नारायण पांडे जी के वॉल पर लेह और लद्दाख का प्रचार देखा। सीमा जागरण मंच के बारे में आज तक सिर्फ सुना था लेकिन कभी जानने का मौका प्राप्त नहीं हुआ था। लद्दाख वह भी सड़क मार्ग

* सहायक व्याख्याता, हिन्दी विभाग
आई.पी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

से मुश्किल था। मन कभी इधर तो कभी उधर विचर रहा था। ऑक्सीजन की कमी मेरे लिए सबसे बड़ी दिक्कत थी। मन बनाते-बनाते लगा मुझे नहीं जाना चाहिए। इस बीच यात्रा प्रभारी से मैं लगातार बातचीत कर रही थी। मैंने उन्हें बताया मेरा बेटा बहुत छोटा है और यदि कोई बड़ी समस्या आ गई तो मैं उसके लिए तैयार नहीं हूँ। उन्होंने कहा आप की यह अकेली चिंता नहीं है। हम समूह में जा रहे हैं सभी एक साथ मिलकर सामना करेंगे। उनके विश्वास ने मुझे संबल दिया और इसके बाद बिना कुछ सोचे मैंने रजिस्ट्रेशन करा दिया। इस समूह में मैं यात्रा से पहले किसी को नहीं जानती थी। नाम भी किसी का परिचित में शामिल नहीं था। कबीर अपने नाम की ही तरह एकदम अलग है। घर में जिसके पीछे खाना लेकर दौड़ती हूँ वह बाहर बड़ों की तरह अपनी प्लेट में खुद खाना सर्व करता है।

मेरी यात्रा अब कबीर की आंखों से होती है। मैं उसे देखती हूँ और वह जो दिखाता है वह देख लेती हूँ। माइनस पंद्रह तक के तापमान का हमने इस बीच सामना किया। उसमें कई स्थानों पर ऑक्सीजन की हमें दिक्कत मिली।

लद्दाख निकलने से पहले मैंने बहुत कुछ पढ़ा और जाना था लेकिन दिक्कत का पूरा अनुमान नहीं हुआ था। अपने लिए अलग से ऑक्सीजन किट लेकर निकली थी। हर पंद्रह मिनट पर कबीर को ओआरएस दिया। कपूर सूंघाती रही। इसके बावजूद एक स्थान पर कबीर को दिक्कत हुई। ऑक्सीजन की कमी से उसे उल्टियां होने लगी। वह लगातार बर्फ से खेलने की जिद किए था। उसी जिद के कारण मैं गाड़ी से उसे नीचे ले गई। 10 मिनट के भीतर उसे भयानक तकलीफ होने लगी। लेकिन मुझे खुद पर पूरा भरोसा था कबीर को कुछ नहीं होने दूंगी। भगवान ने साथ दिया और हमारी इतनी सुंदर यात्रा हो पाई।

9 जून 2023 प्रातः काल 4 बजे हम घर से निकल गए थे। हमारी वापसी 18 जून 2023 को हुई। इस नौ दिवसीय यात्रा की पहली रात हमने मनाली में बितायी। जहाँ सुबह उठते ही सुन्दर नजारा देख कबीर और मेरी आँखें चमक उठी। रिसोर्ट की सीमा में पेड़ पर लगे पहाड़ी फल हमारे आकर्षण का केंद्र था। हरे-हरे छोटे सेब देख कबीर मचल रहा था। यहाँ से हमारे समूह ने बारलाचा की ओर प्रस्थान किया। वाहन देर शाम को जाने के कारण पुलिस ने रोक लिया, यह कहते हुए कि रात में हमारी यह यात्रा सुरक्षित नहीं रहेगी; हमें सुबह ही यात्रा की अनुमति मिल सकती है। तत्काल यह निर्णय लिया गया कि हमारा काफिला रात्रिवास जिस्पा में करेगा। यह स्थान भी कम खूबसूरत नहीं था। नदी किनारे मौजूद टेंटों में हमने रात बितायी। रात्रि में हम माँ बेटा अपने समूह के साथ लम्बी पदयात्रा करके लौटे। भोजन करके तत्काल विश्राम के लिए हम अपने बिस्तर पर पहुँच गए। अगले दिन फिर लेह की यात्रा शुरू हुई। बीच में ऑक्सीजन की कमी के कारण कुछ लोगों की हालत बिगड़ने लगी। एक साथी ने तो आगे जाने में अपने को असमर्थ घोषित कर दिया। दो लोग वहीँ रुक गए ताकि तबियत ठीक होने पर अगले दिन वह हमसे सीधे लेह में जुड़ जाएं। पर्यावरणीय चुनौती को हमने आखिरकार हरा दिया और आगे बढ़ चले।

लेह पहुंचकर हमने आराम किया और अगले दिन वहाँ के स्थानीय स्थलों के दर्शन किये। जिसके अंतर्गत शांति स्तूप, लेह पैलेस, सिंधु-जास्कर नदी संगम, मैग्नेटिक हिल, पत्थर साहब गुरुद्वारा और थ्री इडियट फिल्म में मौजूद पात्र सोनम वांचुंग का विद्यालय मौजूद था। यह सब देखते-देखते देर रात हो चुकी थी। अगले दिन तड़के हमें आगे निकलना था इसलिए भोजन कर के सभी जल्दी सोने जा चुके थे। अगली सुबह हम खारदुंग ला से होकर नुब्रा घाटी की ओर गए। इस तरह के दृश्य आज तक मैंने कभी नहीं देखा था। धरती इतनी भी खूबसूरत हो सकती है भला? यह विचार मन में घूम रहा था। खारदुंग ला सबसे ऊँचा मोटर वाहन चलाने योग्य दर्रा था। पूरे रास्ते बर्फ-बारी चल रही थी। पहाड़ों के बीच सफेद मोटी चादर बिछी हुई थी।

यहाँ से हम उत्तर पुल्लू की ओर गए जो यहाँ से महज आधे घंटे की दूरी पर घाटी में मौजूद है। वहाँ रुककर आर्मी के जवानों से हमने मुलाकात की। दिल्ली से जो उपहार लेकर निकले थे सीमा जागरण की ओर से उन्हें दिया गया। सभी लड़कियों के साथ कबीर ने भी वहाँ मौजूद सभी जवानों को राखी बाँधी। जवानों को ऐसे कठिन सीमाओं पर हमारे देश की सुरक्षा करते देख सभी ने उन्हें दिल से धन्यवाद कहा। आगे नुब्रा वैली पहुँचते ही उसकी सुंदरता देख सभी की आँखें चमक उठी। यहाँ से कुछ घंटों की पुनः यात्रा करके हम हुंदर पहुंचे। कबीर को यह स्थान सबसे अधिक प्रिय लगा क्योंकि वह यहाँ खूब उछलकूद कर पाया। यहाँ तेज हवाओं से बालू के टीले बनते हैं। जिन्हें सैंड डयून्स कहा जाता है। ठण्ड में बालू के टीलों पर चढ़कर सभी ने खूब आनंद लिया।

हुंदर की एक और खासियत है वहाँ पर मौजूद दुहरे कूबड़ वाले ऊंट जिन्हें डबल हम्प्ड भी कहा जाता है। रात्रि प्रवास भी वहीं कैंप में किया गया।

1971 की लड़ाई में भारत ने तुरतुक गाँव पाकिस्तान से जीता था। यह गाँव देखना पूरी यात्रा का अहम पड़ाव रहा। वहाँ करीब बीस से अधिक लोगों से हमारी बात हुई। कई लोग ऐसे भी मिले जिन्हें यह युद्ध बहुत अच्छे से याद था। बमबारी की आवाज आज भी याद कर इन्हें तकलीफ होती है। सरकार ने इस गाँव के लिए इतना किया है कि इतने सुदूर क्षेत्र में भी किसी चीज की कोई कमी नहीं दिखी। सरकारी अस्पताल से लेकर स्कूल तक में सभी तरह की सुविधाएं उपलब्ध हैं। दो सौ से अधिक लोगों के अनुभव ज्ञात हुए। यहाँ के लोगों से अर्थव्यवस्था से लेकर हेल्थ तक की जानकारी एकत्र की गयी।

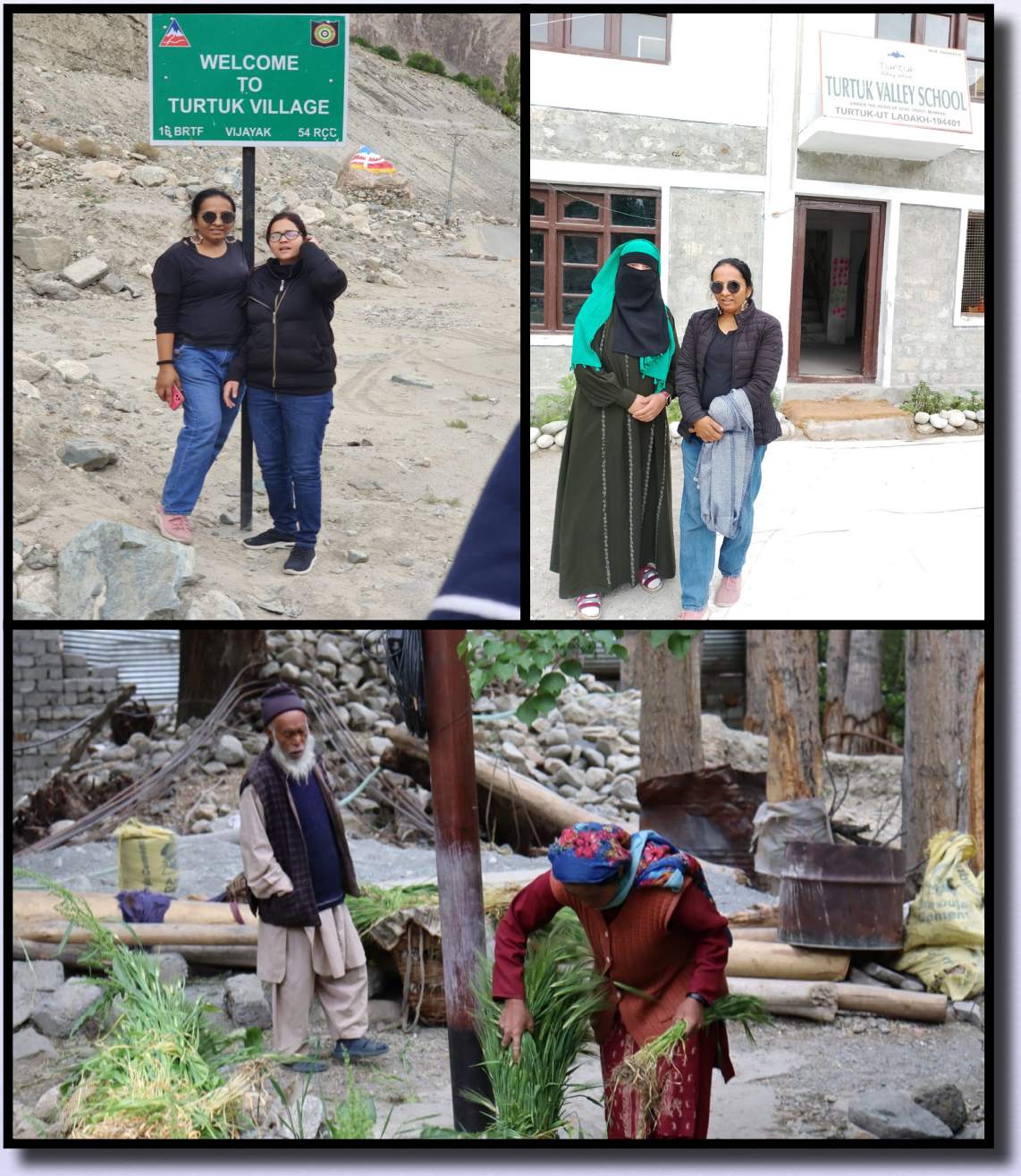

इसके बाद पांगोंग लेक के पास रात्रि प्रवास करके सुबह लेक की खूबसूरती को माइनस टेम्प्रेचर में महसूस किया। भारत-तिब्बत सीमा पर यह लेक मौजूद है। यह झील लगभग 134 किलोमीटर लम्बी है, जिसका 40 प्रतिशत हिस्सा चीन के कब्जे में है और 10 प्रतिशत विवादित क्षेत्र में है। 700 वर्ग किलोमीटर में फैली यह झील अद्भुत सुंदरता लिए हुए है। ऊँची पहाड़ियों से घिरी यह झील दुनिया की सबसे ऊँची खारे पानी की झील है।

चीन बॉर्डर, जहाँ 1962 का युद्ध हुआ वहाँ का भी हमने दौरा किया। उसे रेजांग ला कहा जाता है। यहाँ मौजूद वार मेमोरियल मेजर शैतान सिंह की वीरता की गाथा गाता है। अपने जवानों को समझने के लिए सीमाओं को देखना जरूरी है। लद्दाख छह महीने से अधिक भारत से कटा रहता है। राजमार्ग पूरी तरह से ठप्प रहता है। जहाँ दस मिनट खड़ा होने से लोग मरने की स्थिति में पहुँच जाते हैं वहाँ हमारे सिपाही अपने जान की बाजी लगाकर पहरा दे रहे हैं। मेजर शैतान सिंह को अगर आज की पीढ़ी नहीं जानती तो यह शर्म करने वाली बात है। अपने हाथों से जवानों को राखी बनाकर पहनाने से मुझे जो गर्व हुआ है वह शब्दों में नहीं कहा जा सकता।

अकेले यात्रा कर के कभी भी मैं इस अनुभव को नहीं प्राप्त कर सकती थी। कबीर को इस उम्र में यह सब दिखाकर यह यकीन हो गया है की मैं इस देश का एक बेहतरीन नौजवान तैयार कर रही हूँ।

यात्रा पर निकलते समय मेरा उद्देश्य केवल शांति प्राप्त करना था। सीमा के प्रति कोई भावात्मक सोच लेकर नहीं निकली थी। अरविंद भाई साहब ने लेह में सिंधु भवन में जो आपातकालीन बैठक बुलाई उससे समूह में यात्रा कैसे की जाती है उसका भान हुआ। भाई साहब ने पहले सभी से उनका परिचय और साथी यात्रियों का नाम पूछा। उस क्षण मुझे पता चला कि मैं तो दो या तीन के अलावा किसी का नाम तक नहीं जानती। जबकि इन तेईस लोगों के साथ चार दिन बिना नाम जाने बिता दिए। अभी तक भारत के कई सीमा क्षेत्रों पर जा चुकी थी लेकिन सीमा को जानने का मौका पहली बार प्राप्त हुआ।

पहाड़ और उसका जीवन इस दौरान जाना। आखिर क्या कारण है की पहाड़ के लोग इतनी मुश्किल भरी जिंदगी जीने के बावजूद इतने सरल हैं। उनमें चालाकी अभी तक नहीं आई है। पहाड़ से नीचे रहने वाले ज्यादातर लोग चालाक हैं। लद्दाख में रहने वाले टेंजिल लेह से आगे की यात्रा में हमारे ड्राइवर थे। वह खुद को असली आर्य बताते हैं। इस बीच शोध के कई विषय सामने आए जिनपर आगे काम करने का विचार लेकर आई हूँ।

हमारे भोजन प्रमुख भाई सूरज ने यात्रा को खुशगवार बनाए रखा। उनकी मुस्कुराहट किसी का भी गुस्सा शांत कर सकती है। ऋषभ भाई की फोटोग्राफी ने मुझे कैमरे और फोन से दूर रखा। रवि जी ने मनपसंद गाने लगाने में मदद की। अंत में जो साथ लेकर आई वह है मेरी छोटी बहन विनीता। कोई दिन नहीं जाता जब विनीता से बात न हो। सीमा जागरण मंच ने सिर्फएक यात्रा हमें नहीं करवाई बल्कि एक परिवार भी दिया।

धन्यवाद इस परिवार का हिस्सा बनाने के लिए....

जय हिंद

जय भारत

जय भारतीय सैनिक

****

चित्र : सीमा सिंह